

---

.. pata njalinavakam ..

॥ पतञ्जलिनवकम् ॥

Document Information

---

Text title : patanjalinavakam

File name : patanjalinavakam.itx

Location : doc\_deities\_misc

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Transliterated by : PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com, Vivek Vijayan

Proofread by : PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

Description-comments : Devi book stall, Kodumgallur, Kerala

Source : Sthothra Rathnaakaram, edited by N. Bappuravu, 2010

Latest update : August 6, 2016

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

August 6, 2016

sanskritdocuments.org

---

## ॥ पतञ्जलिनवकम् ॥

सदञ्चितमुदञ्चितनिकुञ्चितपदं झलज्झलज्झलितमञ्जुकटकं  
पतञ्जलितृगञ्जनमनञ्जनमचञ्चलपदं जननभञ्जनकरम् ।  
कदम्बरुचिमम्बरवसं परममम्बुदकदम्बकविडम्बकगलं  
चिदम्बुधिमणिं बुधहृदम्बुजरविं परचिदम्बरनटं हृदि भजे ॥ १ ॥

हरं त्रिपुरभञ्जनमनन्तकृतकङ्कणमखण्डदयमन्तरहितं  
विरिञ्चिसुरसंहतिपुरन्दरविचिन्तितपदं तरुणचन्द्रमकुटम् ।  
परम्पदविखण्डितयमं भसितमण्डिततनुं मदनवञ्चनपरं  
चिरन्तनममुं प्रणवसञ्चितनिधिं परचिदम्बरनटं हृदि भजे ॥ २ ॥

अनन्तनवरत्नविलसत्कटककिङ्किणिझलज्झलज्झलज्झलरवं  
मुकुन्दविधिहस्तगतमद्दलयध्वनिधिमिद्धिमितनर्तनपदम् ।  
शकुन्तरथबर्हिरथदन्तिमुखनन्दिमुखभृङ्गीरिटिसङ्घनिकटं  
सनन्दसनकप्रमुखवन्दितपदं परचिदम्बरनटं हृदि भजे ॥ ३ ॥

अचिन्त्यमलिवृन्दरुचिबन्धुरगलमन्तकभुजङ्गविहङ्गमपतिं  
मुकुन्दसुरवृन्दबलहन्तुकृतवन्दनलसन्तमहिकुण्डलधरम् ।  
अकम्पमनुकम्पनरतिं गलनिषङ्गगरलं भवमदङ्गजहरि  
पतञ्जलिनृतं प्रणतसञ्चितनिधिं परचिदम्बरनटं हृदि भजे ॥ ४ ॥

अनन्तमहसं त्रिदशवन्द्यचरणं मुनिहृदन्तरवसन्तममलं  
कबन्धवियदिन्द्रवनिगन्धवहवह्निमखबन्धुरविमञ्जुवपुषम् ।  
अनन्तविभवं त्रिजगदन्तरमणिं त्रिनयनं त्रिपुरखण्डनपरं  
सनन्दमुनिवन्दितपदं सकरुणं परचिदम्बरनटं हृदि भजे ॥ ५ ॥

अवन्तमखिलं त्रिजगदं भगणतुङ्गमवतंसितपदं सुरसरित्-  
तरङ्गनिकुरम्बधृतिलम्पटजटं शमनडम्भसुहरं भवहरम् ।  
शिवं दशदिगन्तरविजृम्भितकरं करलसन्मृगशिशुं पशुपतिं  
हरं शशिधनञ्जयपतङ्गनयनं परचिदम्बरनटं हृदि भजे ॥ ६ ॥

अनङ्गपरिपन्थिनमजं क्षितिधुरन्धरमलङ्कृतभुजङ्गमपतिं  
ज्वलन्तमनलं दधतमन्तकरिपुं सततमिन्द्रसुरवन्दितपदम् ।  
शिवं करटिचर्मवसनं जलधिजन्मगरलं कबलयन्तमखिलं

दृढं प्रणयकन्दमभयङ्करपदं परचिदम्बरनटं हृदि भजे ॥ ७ ॥

अजं क्षितिरथं भुजङ्गपुङ्गवगुणं कनकशृङ्गधनुषं करलसत्  
कुरङ्गपृथुटङ्गपरशुं रुचिरकुङ्कुमरुचिं डमरुकं च दधतम् ।  
मुकुन्दविशिखं प्रणतवृन्दफलदं निगमतुङ्गतुरगं निरुपमं  
सुगन्धितमहिं सपदि संहतपुरं परचिदम्बरनटं हृदि भजे ॥ ८ ॥

अखण्डविधुमण्डलमुखं डमरुमण्डितकरं कनकमण्डपगृहं  
स्वदण्डतलमुण्डशशिकुण्डलितमण्डनपरं जलखण्डजटिलम् ।  
मृकण्डुसुतचण्डकरदण्डधरमुण्डनपदं भुजगकुण्डलधरं  
शिखण्डशशिखण्डमणिमण्डनपरं परचिदम्बरनटं हृदि भजे ॥ ९ ॥

इति पतञ्जलिनवकं स्तोत्रं समाप्तम् ॥

Proofread by PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

—  
.. pata njalinavakam ..

was typeset on August 6, 2016

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

